IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 10, 2022

प्राचीन समय की वीणाओं के प्रकार

सुरेन्द्र कुमार
सहायक प्रोफेसर
संगीत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

प्राचीन शास्त्रों के अध्ययन के पश्चात् निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उस समय तन्त्रीवाद्यों का नाम 'वाण' था। वाण से ही सभी तन्त्री वाद्यों का नाम वीणा की उपाधि मिली।

''ऋग्वेद कालीन वाण का रूपान्तर सम्भवतः वीणा में हुआ''[1] उस समय वीणा इतना ज्यादा प्रचलित और महत्वपूर्ण वाद्य था कि समय इस वाद्य में तारों की संख्या और इसकी बनावट, इसके आकार–प्रकार और इसकी उपयोगिता को देखते हुए उस समय के संगीत में वीणा के अनेक प्रकार प्रचार में आ गए थे। ऐसा ग्रन्थों के अध्ययन से पता चलता हैं।

''तन्त्रियों की संख्या उनके बनावट तथा आकार–प्रकार के हिसाब से वीणा के अनेक प्रकार विकसित हो चुके थे।''[2]

विभिन्न ग्रन्थों के अध्ययन से पता चलता है कि विद्वानों ने इन विणाओं को प्राचीन वीणा माना है –

1. अलाबु वीणा

अलाबु वीणा को सबसे प्राचीन तन्त्री वाद्य माना गया हैं।

''वैदिक कालीन वीणा थी जिसका अल्लेख नारदीय शिक्षा, पाणिनी शिक्षा, लाट्यायन श्रोत सूत्र में भी अलाबु वीणा का उल्लेख मिलता हैं।''[3]

---

1 संगीत बोध, शरतचन्द्र श्रीधर परांजपे, पृ० 135
2 संगीत बोध, शरतचन्द्र श्रीधर परांजपे, पृ० 136
3 आधुनिक तन्त्रवाद्यों की जननी वीणा, अनुपमा शर्मा, पृ० 89

नान्यदेव ने 'भरत भाष्य' में अलाबु वीणा का उल्लेख किया है। उनके मतानुसारी 'अलाबु वीणा' प्राचीन वीणा थी। यह उप वीणा या अंग वीणा मानी जाती थी''[1]

ठाकुर जयदेव सिंह के अनुसार ''जिस वीणा में तुम्बा होता था, जिसका शीर्ष भाग कपि के मुख जैसे आकार का होता था, वह अलाबु वीणा कहलाती थी। अलाबु का अर्थ है लाउ, लौकी, तुम्बा। यहां तुम्बा अभिप्रेत है।''[2]

अतः विद्वानों के मतों से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि अलाबु वीणा एक प्राचीन वीणा थी और इसका उस समय महत्व भी रहा होगा लेकिन इसके बारे में ज्यादा लिखित प्रमाण प्राप्त नही होते।

2. बल्लकी वीणा

रामायण, महाभारत जैसे प्राचीन ग्रंथो में तन्त्री वाद्यों और उसकी वादन कला के ऊपर प्रकाश डाला गया हैं। इन ग्रंन्थो में बल्लकी वीणा का वर्णन मिलता हैं।

इस वीणा का वादन पुरूषों के अतिरिक्त राजघराने की स्त्रियां भी करती थी।''[3]

वीणा का एक प्रकार 'बल्लकी' नाम से प्रचलित था और वह अन्तः पुर की स्त्रियों द्वारा बजाई जाती थी। वीणा का निर्माण भी कुशल शिल्पियों द्वारा किया जाता था।''[4]

शांरगदेव और शुभंकर ने अपने 'संगीत दामोदर' में तत् वाद्वाद्यों की सूची में बल्लकी नाम दिया हैं किन्तु उसको कोई वर्णन नही हैं।''[5]

3. वक्री वीणा

''श्रीधर शरतचन्द्र जी ने कुछ वीणाओं के नाम दिये हैं जिनमे वक्री वीणा भी हैं।''[6] जैसे शततन्त्री वीणा काण्डवीणा, पिच्छोला, कर्कटिका, अलाबु, वक्री इत्यादि''[7]

---

1 आधुनिक तन्त्रवाद्यों की जननी वीणा, अनुपमा शर्मा, पृ० 89
2 आधुनिक तन्त्रवाद्यों की जननी वीणा, अनुपमा शर्मा, पृ० 89
3 आधुनिक तन्त्रवाद्यों की जननी वीणा, अनुपमा शर्मा, पृ० 89
4 संगीत बोध, शरत् श्रीधर परांजपे, पृ० 134
5 भारतीय संगीत का इतिहास, ठाकुर जयदेव सिंह, पृ० 198
6 आधुनिक तन्त्रवाद्यों की जननी वीणा, अनुपमा शर्मा, पृ० 90
7 संगीत वाद्य, शरत् श्रीधर परांजपे, पृ० 135

4. तुम्बी वीणा

ठाकुर जयदेव सिंह ने तुम्बी वीणा के सम्बन्ध में लिखा है –जैन ग्रन्थ में 'रायपसेनियसुत' में भी तुम्बी वीणा का उल्लेख हैं, किन्तु तुम्बी वीणा किस प्रकार की वीणा का उल्लेख है, किन्तु तुम्बी वीणा किस प्रकार की वीणा थी इसका निर्णय करना कठिन है। ''कुछ विद्वानों का मत है कि 'तुम्बी वीणा' और तुम्बक वीणा वही है जिसे आजकल तम्बूरा कहते हैं।''[1]

यह माना जाता है कि आज के संगीत में प्रचलित तानपुरा सम्भवतः 'तुम्बी वीणा' का परिवर्तित रूप हैं।''[2]

5. एक तन्त्री वीणा

वैदिक कालीन वीणाओं में एक तन्त्री वीणा का अधिकाशंतः उल्लेख मिलता हैं क्योंकि तत्कालीन अनेक ग्रन्थों में 'एक तन्त्री' वीणा के सम्बन्ध में विवरण प्राप्त होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि एक तन्त्री उस समय की प्रमुख वीणा थी।''[3]

संगीत मकरन्द में नौ वीणाओं के उल्लेख प्राप्त होते है जिसमें एक तन्त्री वीणा के सम्बन्ध में विवरण हैं।''[4]

आचार्य बृहस्पति ने संगीत चिन्तामणि में लिखा हैं – ''एक तन्त्री वीणा में केवल एक तार होता था, बाँये हाथ से बाँस की बारह अंगुल लम्बी श्लाका लेकर उससे तार पर विभिन्न स्वरों की साखांए की जाती थी।''[5]

एक तन्त्री वीणा का नाम द्योषक है जो आदि वीणा मानी गई हैं। इसके दाण्ड की और एक नारियल का तुम्बा लगा रहता हैं, तन्त्री ताँत की होती थी। इसे बजाने के लिए बाँए हाथ की तीन उगँलियों को दबाकर भिन्न–भिन्न स्वर निकाले जाते थे। इस पर मन्द्र, मध्य तथा तार स्थानों पर वादन होता है। इस वीणा के नौ अंग होते थे। यथा–

---

1 भारतीय संगीत का इतिहास, ठाकुर जयदेव सिंह, पृ० 199
2 आधुनिक तन्त्रवाद्यों की जननी वीणा, अनुपमा शर्मा, पृ० 90
3 आधुनिक तन्त्रवाद्यों की जननी वीणा, अनुपमा शर्मा, पृ० 91
4 आधुनिक तन्त्रवाद्यों की जननी वीणा, अनुपमा शर्मा, पृ० 91
5 आधुनिक तन्त्रवाद्यों की जननी वीणा, अनुपमा शर्मा, पृ० 92

1. दण्ड, 2. तन्त्री, 3. कुकुभ, 4. पत्रिका (घुड़च), 5. तुम्ब, 6. नाभि, 7. दोरक (रस्सी), 8. जीवा (जवारी), 9. दोरिका।[1]

6. काण्ड वीणा

'काण्ड वीणा' भी प्राचीन वीणा थी। इसके नामों का उल्लेख कई ग्रन्थों में प्राप्त होता हैं। जैसा कि डॉ० परांजपे ने 'संगीत बोध' में काण्ड वीणा का नाम उल्लेख किया हैं।''[2]

ठाकुर जयदेव सिंह ने अपने ग्रन्थ में काएड वीणा के सम्बन्ध में लिखा है ''उपगाना के पश्चिम की ओर दो संगीतज्ञ स्त्रियां आमने–सामने बैठती थी। एक के हाथ में काण्ड वीणा होती थी, दूसरी के हाथ में पिच्छोरा/काण्ड वीणा नखी से बजाई जाती थी और पिच्छोरा मुख से/वाद्यों की जोड़ी को अपघाटिता कहते थे।''[3]

7. महती वीणा

महती वीणा महर्षि नारद की वीणा मानी गई हैं। विद्वानों ने इस वीणा में 21 तन्त्रियाँ मानी। इस सम्भावना से भी इंकार नही किया जा सकता कि बाद में इस वीणा को मतेकोकिला वीणा भी कहा गया। इस वीणा पर तीन ग्राम और इक्कीस मूर्च्छनाए भी विद्वानों ने मानी हैं।

8. कलावती वीणा

ग्रन्थों में 'कलावती' नाम की वीणा का भी उल्लेख हैं। विद्वानों का मानना है कि कलावती वीणा ऋषि तुम्बक की वीणा थी। संगीत सार और संगीत दामोदर में कलावती वीणा तुम्बक ऋषि की वीणा बताई गई''[4]

9. शील वीणा

'शील वीणा' भी एक प्राचीन वीणा थी जिसका नामोल्लेख तो मिलता है किन्तु पूर्ण विवरण नहीं हैं।[5]

---

1 भारतीय संगीत वाद्य, डॉ० श्रीधर शतचन्द्र परांजपे, पृ० 136
2 आधुनिक तन्त्रवाद्यों की जननी वीणा, अनुपमा शर्मा, पृ० 93
3 भारतीय संगीत का इतिहास, ठाकुर जयदेव सिंह, पृ० 254
4 आधुनिक तन्त्रवाद्यों की जननी वीणा, अनुपमा शर्मा, पृ० 95
5 आधुनिक तन्त्रवाद्यों की जननी वीणा, अनुपमा शर्मा, पृ० 93

10. कच्छपि वीणा

कच्छपि वीणाको सरस्वती वीणा भी कहा जाता है। इस वीणा की आकृति कछुए की भांति होती थी इसलिए इसे कच्छपि वीणा के नाम से जाना गया।

11. मत्त कोकिला वीणा

मत्त कोकिला वीणा तीन सप्तकों अर्थात् तीन स्थानों की दृष्टि से पूर्ण थी। महती वीणा में भी मत्तकोकिला की भाँति 21 तन्त्रियां होती थी और मूर्च्छना प्रयोजन और तीन सप्तकों के प्राप्त होने के कारण सम्भवत नान्यदेव ने मत्तकोकिला को 'मंहती वीणा' कहा हैं।[1]

सभी वीणाओं के सम्बन्ध में यद्यपि पूरी जानकारी नही मिलती हैं। फिर भी ग्रन्थों में प्राप्त वीणाओं के सन्दभों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि अधिक प्रधानता रही होगी।

1. एकतन्त्री वीणा
2. दूसरे प्रकार की वे वीणाएं जिनमें प्रत्येक स्वर के लिए अलग–अलग तन्त्रियां जिसे मतकोकिला नाम दिया गया।

1 आधुनिक तन्त्रवाद्यों की जननी वीणा, अनुपमा शर्मा, पृ० 96

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, अनुपमा, आधुनिक तन्त्र वाद्यों की जननी वीणा, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स 4697/5–21ए, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
2. 'सिंह' ठाकुर जयदेव, भारतीय संगीत का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. परांजपे, शरत्चन्द्र श्रीधर, संगीत बोध, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ संगीत अकादमी रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, भोपाल